आचार्य नरेन्द्रसेन

जीवन-परिचय : नरेन्द्रसेन वीरसेन के प्रशिष्य और गुणसेन के शिष्य हैं। उन्होंने ग्रन्थ के पुष्पिका-वाक्य में अपने को पंडिताचार्य विशेषण के साथ लिखा है।

नरेन्द्रसेन ने अपने गुरुओं के लिए लिखा है कि मेरी बुद्धि वीरसेन के प्रसाद से निर्मल हुई है और गुणसेनाचार्य के आशीर्वाद से मैं साधु के द्वारा पूजित देवसेन के पट्ट (पद) पर प्रतिष्ठित हुआ हूँ।

नरेन्द्रसेन का समय विक्रम संवत् 1120 ई. से 1160 तक का माना जाता है।

रचना-परिचय : नरेन्द्रसेन की दो कृतियाँ प्रसिद्ध हैं—

1. सिद्धान्तसारसंग्रह : इस ग्रन्थ में 12 अधिकार हैं, जिनमें कुल 1924 श्लोक हैं। इस ग्रन्थ में मुख्य रूप से गृद्धपिच्छाचार्य के तत्त्वार्थसूत्र का विषय वर्णन है, किन्तु गौण रूप से अन्य अनेक बातों का भी संकलन है।

2. प्रतिष्ठा दीपक : इनकी दूसरी कृति प्रतिष्ठा-दीपक है, जिसकी रचना उन्होंने पूर्वाचार्यों के अनुसार की है। यह रचना अभी अप्रकाशित है।